Guru Jambheshwar University of Science & technology Hisar.
In news In February 2018

हिसार। संस्थान के 41वें वार्षिक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में अवार्ड प्राप्त करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार। फोटो: हरिभूमि

प्रो. टंकेश्वर को मिला डॉ. राधाकृष्ण एजुकेशन एक्सीलैंस अवार्ड

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार को डा. राधाकृष्ण एजुकेशन एक्सीलैंस अवार्ड से नवाजा गया है। यह गौरवपूर्ण सम्मान अत्यन्त प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संस्था इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल हेरिटेज, कोलकाता द्वारा दिया जाता है। प्रो. टंकेश्वर कुमार को यह सम्मान नई दिल्ली में हुए संस्थान के 41वें वार्षिक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। संस्थान द्वारा यह सम्मान साहित्य, भाषा, कला, संस्कृति तथा प्राचीन ज्ञान को वर्तमान संदर्भों में बढ़ावा देने आदि क्षेत्रों में शोध व विकास के लिए दिए जाने वाले उच्चस्तरीय योगदान के लिए दिया जाता है। प्रो. टंकेश्वर कुमार की एक कुशल प्रशासक के साथ-साथ महान शिक्षाविद के रूप में भी देशभर में पहचान है। उन्हें इस सम्मान से पूर्व विद्यासागर पुरस्कार 2017, लाइफटाइम अचीवमैंट पुरस्कार 2016, शिक्षा नेतृत्व पुरस्कार 2016, विजय श्री अवार्ड 2016 तथा आईएमबीवीएस अवार्ड 2015 भी मिल चुके हैं। एक शिक्षाविद के रूप में एफआरपी के तहत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के भारत के पहले प्रोफेसर प्रो. टंकेश्वर कुमार अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में अपना उच्चस्तरीय योगदान दे रहे हैं।

हरिभूमि - 6/2/18

जीजेयू में कुलपति ने मेधावियों को किया सम्मानित

अमर उजाला ब्यूरो
हिसार।

विजेता छात्रा को सम्मानित करते कुलपति टंकेश्वर।

जीजेयू के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल रोजगार के लिए निपुण करना ही नहीं, बल्कि उन्हें नैतिक व्यक्ति के साथ एक जिम्मेदार नागरिक बनाना भी है। विद्यार्थी जब सृजनात्मक आइडिया विकसित करेंगे, तभी एक देश के रूप में हम विकास कर सकेंगे।

प्रो. टंकेश्वर कुमार परीक्षा विंग की ओर से आयोजित आंतरिक मूल्यांकन टॉपर सम्मान समारोह में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। गणतंत्र दिवस के दिन राजपथ पर आयोजित हुई स्वयंसेवकों की परेड में भाग लेने वाले स्वयंसेवकों को भी सम्मानित किया गया। प्रो. यशपाल सिंगला ने बताया कि आंतरिक मूल्यांकन अंकों के टॉपर कम्युनिकेशन मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी विभाग की पूजा, सुनिधि, नैंसी, अप्लाइड साइकोलॉजी विभाग की मंजू आर्या, सुरभि, नीलम रानी, फूड टेक्नोलॉजी विभाग की भावना आनंद, दीपक सांगवान, रोशन अधिकारी, मनीष तिवारी, हिमांशु यादव, अरुण सैनी, संदीप चौधरी व सुमित बंसल, बायो एंड नेनो टेक्नोलॉजी विभाग के पियूष हंस, हिना, अंजना, आरुषि, प्रशांत भारद्वाज, मोनू, नियाज तबस्सुम, रुचि व अनु कुमारी ने पहला स्थान प्राप्त किया। फिजियोथैरेपी विभाग के ईशान गुप्ता, निरोल, अनुभूति झा, सरिता, शालू जांगड़ा, करिश्मा सोनी, नैंसी सिंगला, सरिता व चारू गेरा, मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के रवि रोशन, मानसी, अजय, मोहित, आशीष ढुल व मनोज कुमार, केमिस्ट्री विभाग की पूजा, किरण, शनी भावी कौशिक व अजय कुमार, मैथेमेटिक्स विभाग की अनुपमा, कोमल, संजू देवी, मनीषा व यशिका ने पहला स्थान प्राप्त किया। विश्वविद्यालय की छात्रा अनुप्रिया ने इसी वर्ष स्वयंसेवकों की परेड का नेतृत्व किया था।

अमर उजाला - 7/2/18

गुजवि के 5 विद्यार्थियों की प्लेसमेंट

जीजेयू के चयनित विद्यार्थी स्टाफ के साथ।

हिसार(ब्यूरो)। गुजवि हिसार के फिजियोथेरेपी विभाग के 5 विद्यार्थियों का चयन आस्था थेरेप्यूटिक इंटरवेंशन, मोहाली में हुआ है। विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सैल के सौजन्य से फिजियोथेरेपी विभाग के विद्यार्थियों के लिए कैंपस प्लेसमेंट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभाग के 28 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों की प्री प्लेसमेंट टॉक एवं साक्षात्कार के आधार पर विश्वविद्यालय के 5 विद्यार्थियों का चयन किया है। ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सैल के सहायक निदेशक आदित्यवीर सिंह ने बताया कि चयनित विद्यार्थियों में एमपीटी और बीपीटी की कल्पना, नेहा कंसल, पूजा वर्मा, पिंकी व अनीता शामिल हैं।

अमर उजाला - 9/2/18

भूल न जाना... अलजाइमर्स की दवा के परीक्षण के लिए बनाया दिलचस्प मॉडल, गुजवि में हुआ शोध, केंद्रीय विज्ञान व तकनीकी विभाग ने सौंपा था प्रोजेक्ट

'बिसात' पर चूहे चल रहे चाल, जीते तो 'याद' रखेगी दुनिया

जागरण विशेष

संदीप बिश्नोई • हिसार

अलजाइमर्स रोग, जिसमें व्यक्ति की याद रखने की क्षमता क्षीण हो जाती है और वह भूलने लग जाता है, तेजी से बढ़ रहा है। बुजुर्गों में यह समस्या आम है। इसके लिए बनने वाली नई दवाओं का शुरुआती परीक्षण चूहों पर किया जाता रहा है, लेकिन करंट की युक्ति पर आधारित पुराने मॉडल को प्रतिबंधित कर दिए जाने के बाद किसी नए मॉडल की दरकार थी। हिसार, हरियाणा स्थित गुरु जंभेश्वर विज्ञान व तकनीकी विश्वविद्यालय ने इसमें कामयाबी पाई है। विवि को यह प्रोजेक्ट केंद्रीय विज्ञान व तकनीकी विभाग ने सौंपा था।

गुजवि की शोधार्थी सुशीला। जागरण

शतरंजनुमा बिसात पर बनाया गया मॉडल। • जागरण

शतरंजनुमा बिसात पर बनाया गया मॉडल: इस परीक्षण मॉडल के जरिये याददाश्त बढ़ाने के लिए बनने वाली नई दवाओं के अच्छे-बुरे असर का परीक्षण चूहों के माध्यम से संभव हो सकेगा। चूहों को दवाएं दी जाएंगी और फिर उन्हें शतरंजनुमा बिसात पर चाल चलने के लिए छोड़ दिया जाएगा। किस दवा से उनकी चाल कितनी बेहतर हुई अथवा बिगड़ी, इसका परीक्षण कर दवाओं से उनकी याददाश्त पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकेगा। केंद्रीय विज्ञान व तकनीकी विभाग ने विश्वविद्यालय की शोधार्थी डॉ. सुशीला को यह प्रोजेक्ट सौंपा था।

ऐसा है मॉडल

एक तरह का विशेष शतरंजनुमा बोर्ड तैयार किया गया है, जिस पर चूहों को छोड़ा जाता है। बोर्ड पर सफेद और काले रंग के चौखाने हैं। काले रंग के कुछ चौखानों को काट गड्ढे बना दिए गए हैं। गड्ढों के नीचे काला बैग लगाया गया है ताकि चूहे गिरें तो उनको चोट न लगे। चूहों को भ्रम में डालने के लिए गड्ढे बनाए गए हैं।

क्यों चाहिए यह मॉडल

इंसानों की याददाश्त बढ़ाने के लिए दुनिया भर में शोध होते रहते है। कई दवाएं बनाई जाती है। प्राथमिक तौर पर उनका प्रयोग इंसानों पर नहीं किया जा सकता है। चूहों पर दवाओं के प्रभाव के आधार पर शोध किया जाता है। पुराने मॉडल में चूहों को में करंट के झटके लगाए जाते थे।

ऐसे चली चूहों ने चाल

तीन चरणों में परीक्षण हुआ। पहले साधारण बोर्ड पर चूहे को छोड़ा गया। चूहा इस पर सफेद और काले चौखानों पर चलता रहा। कुछ दिन बाद उसे गड्ढे वाले बोर्ड पर छोड़ा गया। चूहा काले गड्ढे में गिरता रहा। लेकिन पांच दिन बाद वह केवल सफेद चौखानों पर चलने का अभ्यस्त हो गया। साधारण बोर्ड पर छोड़े जाने के बाद भी वह केवल सफेद चौखानों पर ही चलता रहा। उसके बाद उसे याददाश्त भूलने की दवा दी गई और गड्ढे वाले बोर्ड पर छोड़ा गया। वह फिर से काले गड्ढों में गिरने लगा। 48 घंटे बाद जैसे ही दवा का असर खत्म हुआ, वह फिर से केवल सफेद चौखानों पर चलने लगा। अब अलग ग्रुप के चूहों को याददाश्त बढ़ाने वाली दवा दी गई। इससे वह पांच दिन की जगह दो दिन में ही बोर्ड पर चलने के अभ्यस्त हो गए। तीसरे स्टेप में चूहों को पहले याददाश्त मंद कर देने वाली दवा दी गई और 15 मिनट बाद याददाश्त बढ़ाने वाली दवा दी गई। पाया गया कि चूहे केवल सफेद खानों पर ही चल रहे हैं।

यह मॉडल मेडिकल जगत के लिए एक शानदार उपलब्धि साबित होगा। याददाश्त बढ़ाने के लिए बनने वाली किसी भी नई दवा का इस मॉडल पर परीक्षण किया जा सकता है। हमने अपने मॉडल का पेटेंट करवा लिया है।

– डॉ. मिलिंद पारले, प्रोजेक्ट से जुड़े वैज्ञानिक

अन्य विशेष खबरों के लिए इस लिंक पर जाएं।
www.jagran.com/topics/jagran-special

ऑर्गेनिक पर ध्यान देने से ही नहीं चलेगा काम पेस्टिसाइड की मात्रा भी कम करने की जरूरत

जीजेयू में अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के दौरान नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. ऑर्थर रीडकर ने जताई चिंता

जागरण संवाददाता, हिसार : नोबेल पुरस्कार विजेता एवं फ्रांस के एमेरिटस डायरेक्टर रिसर्च प्रो. आर्थर रीडकर ने कहा कि भारत में पेस्टिसाइड की अधिकता बड़ा मुद्दा है, इसे कम करना होगा। केमिकल फर्टीलाइजर आदि के इस्तेमाल को लेकर यहां जलवायु परिवर्तन के अनुसार व्यापक स्तर पर अनुसंधान की जरूरत है, ताकि खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाया जा सके। भारत के किसान अकेले ऑर्गेनिक खेती पर नहीं चल सकते। केमिकल को गेहूं या अन्य फसलों में डालने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन जरूरत के अनुसार डालना जरूरी है। ताकि पौधे को जरूरी तत्व मिल सकें। प्रो. रीडकर बुधवार को गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में आयोजित बॉयो एंड नेनो टेक्नोलॉजीज फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर, फूड, हेल्थ, एनर्जी एंड इंडस्ट्री' विषय पर शुरू हुए तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लेने आए थे। प्रो. आर्थर ओकोस खाद्य सुरक्षा, फ्रांस के प्रधान भी हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजवि के वीसी प्रो. टंकेश्वर कुमार ने की।

रिसर्च के बिना गाय के गोबर को उत्पादन के लिए नहीं मानता बेहतर : गाय के गोबर से उत्पादन बढ़ने के सवाल पर प्रो. रीडकर ने कहा कि मैं इस बात को नहीं मानता। जब तक इस तरह की कोई रिसर्च हमारे सामने नहीं आती, तब तक यह नहीं माना जा सकता कि गाय का गोबर किसी तरीके से उत्पादन बढ़ाने में फायदेमंद हो सकता है। भारत को उसके पशुधन पर भी ध्यान देने के अलावा भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने पर ध्यान देना होगा। इस देश में संसाधनों की कमी नहीं है, रिसर्च की जरूरत है।

किसानों को जागरूक करना जरूरी : उन्होंने कहा कि भारत में अंधाधुंध तरीके से पेस्टिसाइड खेतों में फेंका जा रहा है। इसे कम करना ही होगा। वर्ना भविष्य में गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। बीमारियां बढ़ जाएंगी। इसके लिए जरूरी है कि किसानों को जागरूक किया जाए। उन्हें कब, कहां, कितना पेस्टिसाइड या केमिकल डालना है, इसके लिए वैज्ञानिकों की सलाह लेना या निर्धारित मानकों का पालन करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि कार्बन उत्सर्जन के लिए देश में सौलर पीवी का इस्तेमाल को बढ़ावा देने की जरूरत है।

मुख्यातिथि प्रो. आर्थर रीडकर को सम्मानित करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार।

इन चार स्तरों से समझिए वातावरण में बदलाव का मुद्दा

प्रो. आर्थर रीडकर ने कहा कि वातावरण में बदलाव के मुद्दे को चार स्तरों पर समझा जाना आवश्यक है। पहला इस संबंध में 1970 के बाद का वैज्ञानिक ज्ञान, दूसरा इस मुद्दे पर नीति निर्धारकों तथा आम जनता की जागरूकता, तीसरा 1992 को क्लाइमेट वेंशन तथा एचएनएफसीसीसी व 1997 के क्योटो प्रोटोकोल के बाद सरकारों द्वारा नीतियां व मापदंड अपनाने और चौथा 2015 के पेरिस समझौते के बाद नई नीतियां व मापदंड अपनाना।

75 फीसद तक रोकना होगा खतरनाक गैस का उत्पादन

प्रो. रीडकर ने कहा कि क्योटो प्रोटोकाल के अनुसार औद्योगिक देशों ने खतरनाक गैसों से उत्सर्जन को पांच प्रतिशत तक कम करने का निर्णय लिया था। 1850 से 2050 तक तापमान दो प्रतिशत बढ़ जाने का खतरा है। ऐसे में खतरनाक गैसों के केवल पांच प्रतिशत उत्सर्जन को रोकना ही पर्याप्त नहीं है। बल्कि 75 प्रतिशत तक रोकना होगा। उन्होंने कहा कि तेल की कमी नहीं है। तेल को लेकर एक वैश्विक नीति की जरूरत है। कृषि व भोजन से संबंधित क्षेत्रों की आवश्यकताओं को देखते हुए यह एक बड़ी चुनौती है।

जीजेयू में स्थाई विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

जागरण संवाददाता, हिसार : गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय के बॉयो एंड नेनो तकनीक विभाग द्वारा सोसाइटी फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स मैनेजमेंट के सहयोग से 'बॉयो एंड नेनो टेक्नोलॉजीज फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर, फूड, हेल्थ, एनर्जी एंड इंडस्ट्री' विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ।

इस दौरान ओकोस खाद्य सुरक्षा, फ्रांस के प्रधान व आईएनआरए, फ्रांस के एमेरिटस डायरेक्टर रिसर्च प्रो. आर्थर रीडकर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. अनिल कुमार पुंडीर व सोसाइटी फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स मैनेजमेंट के अध्यक्ष व जवाहर लाल कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के पूर्व कुलपति प्रो. डीपी सिंह मौजूद रहे। प्रो. ऑर्थर ने कहा है कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वैश्विक व स्थानीय स्तर पर एक साथ प्रयास करने होंगे। अन्यथा परिणाम अति गंभीर हो सकते हैं। उन्होंने वन कटाव को रोकने के लिए तुरंत प्रभावी कदम उठाने का भी आह्वान किया। कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि नई तकनीक का प्रयोग वर्तमान समय की जरूरत है, लेकिन इसके प्रयोग में हमें सावधानी बरतनी होगी। तकनीकी विकास के प्रयोग से प्राकृतिक संसाधनों तथा पर्यावरण को हानि नहीं पहुंचनी चाहिए। सोसाइटी फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स मैनेजमैंट के अध्यक्ष व जवाहर लाल कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के पूर्व कुलपति प्रो. डीपी सिंह ने सोसाइटी की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

दैनिक जागरण- 22/2/18

गुजवि के 2 छात्रों को जर्मनी में शोध करने की पेशकश

हिसार, 23 फरवरी (स.ह.): गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के बॉयो एंड नैनो तकनीक विभाग द्वारा सोसायटी फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स मैनेजमैंट के सहयोग से 'बॉयो एंड नैनो टैक्नोलॉजीज फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर, फूड, हैल्थ, एनर्जी एंड इंडस्ट्री' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन शुक्रवार को सम्पन्न हुआ।

समापन समारोह में यूनिवर्सिटी ऑफ सासकचेवन, कनाडा के प्रो. रविंद्रा एन. चिब्बर ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। समारोह में सोसायटी फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स मैनेजमैंट के संरक्षक प्रो. ऋषि के. बहल, बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी के डा. मानफ्रेड करन, एल्बर्टा विश्वविद्यायल, एल्बर्टा, कनाडा के प्रो. डेविड मार्क ओल्सन, केरो विश्वविद्यालय, इजिप्ट

छात्रा को प्रमाण पत्र देते हुए प्रो. रविंद्रा एन. चिब्बर व प्रो. विनोद छौक्कर।

के डा. होसम ई. रशदी तथा मुरडॉक विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया की डा. ज्योति राणा उपस्थित रहे।

इस अवसर पर बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी के डा. मानफ्रेड करन ने विभाग के दो विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर के बाद बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी में शोध करने की पेशकश की। मुख्यातिथि चिब्बर ने कहा कि शोध नवीन तकनीकों पर होना चाहिए जिससे वैश्विक जलवायु पर कम से कम प्रभाव पड़े। नैनो तकनीक भविष्य की विज्ञान है। यह तकनीक कृषि और स्वास्थ्य क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी है। शोधार्थियों के लिए नैनो तकनीक में शोध की अपार सम्भावनाएं है। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से अपील करते हुए कहा कि वे नए तकनीकी शोध कर और राष्ट्र व समाज हित में उनका बड़े स्तर पर प्रसार करें।

डीन फैकल्टी ऑफ इनवायरमैंट एंड बॉयो साइंसिज एंड टैक्नोलॉजी प्रो. अशोक चौधरी ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन प्रतिभागियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 484 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए जिसमें से 19 शोधपत्रों को सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र घोषित किया गया।

इसी दौरान 490 पोस्टर प्रस्तुत किए गए जिसमें से 11 पोस्टरों को सर्वश्रेष्ठ पोस्टर घोषित किया गया। सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए।

पंजाब केसरी - 24/2/18

जीजेयू में सेमिनार | एग्रीकल्चर, फूड और हेल्थ विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रो. छिब्बर ने रखे अपने विचार

नैनो तकनीक शोधार्थियों के लिए अपार संभावनाएं

भास्कर न्यूज | हिसार

जीजेयू के बायो एंड नैनो तकनीक विभाग के सोसायटी फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स मैनेजमेंट के सहयोग से 'बायो एंड नैनो टेक्नोलॉजीज फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर, फूड, हेल्थ, एनर्जी एंड इंडस्ट्री' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुक्रवार को संपन्न हुआ। समापन समारोह में यूनिवर्सिटी ऑफ सासकचेवन, कनाडा के प्रो. रविन्द्रा एन. चिब्बर बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। समारोह में सोसायटी फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स मैनेजमेंट के संरक्षक प्रो. ऋषि के. बहल, बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी के डॉ. मानफ्रेड करन, एल्बर्टा विश्वविद्यायल, एल्बर्टा, कनाडा के प्रो. डेविड मार्क ओल्सन, केरो

बायो एंड नैनो टेक्नोलॉजी की एग्रीकल्चर, हेल्थ, इंडस्ट्रीज विषयों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन से विदा होते मेहमान।

विश्वविद्यालय, इजिप्ट के डॉ. होसम ई. रशदी तथा मुरडॉक विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया की डॉ. ज्योति राणा उपस्थित रहे। इस अवसर पर बॉन विव, जर्मनी के डॉ. मानफ्रेड करन ने विभाग के दो विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर के बाद बॉन विव, जर्मनी में शोध करने की पेशकश की।

484 शोधपत्र व 490 पोस्टर प्रस्तुत

बॉयो एंड नैनो तकनीक विभाग के अध्यक्ष व अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समन्वयक प्रो. विनोद छोकर ने बताया कि तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में आठ तकनीकी सत्रों तथा सात पोस्टर पब्लिकेशन सत्रों का आयोजन किया गया। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 484 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए, जिसमें से 19 शोधपत्रों को सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र घोषित किया गया। इसी दौरान 490 पोस्टर प्रस्तुत किए गए जिसमें से 11 पोस्टरों को सर्वश्रेष्ठ पोस्टर घोषित किया गया।

पोस्टर प्रेजेंटेशन देने वाली छात्रा

दैनिक भास्कर - 24/2/18

वर्तमान की मांग है सूचनाओं का प्रेषण : प्रो टंकेश्वर

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार।

जीजेयू हिसार के न्यूज लैटर के नए अंक का विमोचन किया गया। विश्वविद्यालय के कमेटी रूम में हुए विमोचन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति एवं न्यूजलैटर के मुख्य सम्पादक प्रो. टंकेश्वर कुमार ने की।

न्यूज लैटर के नए अंक का विमोचन करते विवि के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार एवं अन्य।

इस अवसर पर प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि सूचनाओं का प्रेषण वर्तमान समय की मांग है। विभिन्न माध्यमों से सूचनाएं प्रेषित किया जाना अत्यंत आवश्यक है। न्यूजलैटर की सूचना प्रेषण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि न्यूजलैटर नियमित रूप से हर तीन माह बाद प्रकाशित किया जाएगा। सम्पादक डा. पंकज कुमार ने विभागों से कहा कि सम्बन्धित सूचनाएं समय पर उपलब्ध करवाएं। जरूरत पड़ने पर न्यूजलैटर के पेज बढ़ाए जा सकते हैं। इस अवसर पर शैक्षणिक मामलों के अधिष्ठाता प्रो. राजेश मल्होत्रा, प्रोक्टर संदीप राणा, डीन ऑफ कॉलेजिज प्रो. नरसीराम बिश्नोई, परीक्षा नियंत्रक प्रो. यशपाल सिंगला, उपकुलसचिव डॉ. एसएस दलाल, उप कुलसचिव रविदत्त पांडे, युवा कल्याण निदेशक अजीत सिंह व कुलपति के सचिव मुकेश कुमार उपस्थित रहे।

नवीन तकनीकों पर होना चाहिए शोध : प्रो. चिब्बर

हिसार। गुजवि के बॉयो एंड नेनो तकनीक विभाग द्वारा सोसायटी फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड रिसोर्स मैनेजमैंट के सहयोग से बॉयो एंड नेनो टेक्नोलॉजीज फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर, फूड, हेल्थ, एनर्जी एंड इंडस्ट्रीज विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुक्रवार को संपन्न हुआ। समापन समारोह में यूनिवर्सिटी ऑफ सासकचेवन, कनाडा के प्रो. रविन्द्रा एन. चिब्बर ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्यातिथि प्रो. रविन्द्रा एन. चिब्बर ने कहा कि शोध नवीन तकनीकों पर होना चाहिए, जिससे वैश्विक जलवायु पर कम से कम प्रभाव पड़े। नेनो तकनीक भविष्य की विज्ञान है। यह तकनीक कृषि और स्वास्थ्य क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने कहा कि शोधार्थियों के लिए नेनो तकनीक में शोध की अपार सम्भावनाएं हैं। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से अपील करते हुए कहा कि वे नए तकनीकी शोध करे और राष्ट्र व समाज हित में उनका बड़े स्तर पर प्रसार करें। इस अवसर पर डीन फैकल्टी ऑफ इनवायरमैंट एंड बॉयो साईंसिज एंड टैक्नोलॉजी प्रो. अशोक चौधरी ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन प्रतिभागियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए। उन्होंने अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में सहयोग के लिए विभागों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षक, गैर शिक्षक कर्मचारी व शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों का धन्यवाद किया।

अमर उजाला - 24/2/18

दो दिवसीय विश्व विज्ञान दिवस के समापन समारोह में बोले गुजवि कुलपति

'हमने दुनिया को खगोलीय ज्ञान दिया'

गुजविप्रौवि में आयोजित प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार।

आज समाज नेटवर्क

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि रामायण और महाभारत के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाना भारत के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाना है। नई खगोलीय तकनीक से यह सिद्ध हो गया है कि भगवान श्री राम का जन्म कब हुआ था और उनके जीवन से जुड़ी घटनाएं कब-कब घटी। इन घटनाओं की प्रमाणित तिथियां भी उपलब्ध है।

प्रो. टंकेश्वर कुमार डीन ऑफ फिजिकल साईंसिज कार्यालय द्वारा नोबेल पुरस्कार विजेता सर सीवी रमन की याद में मनाए जा रहे दो दिवसीय विश्व विज्ञान दिवस के समापन समारोह को बतौर मुख्यातिथि सम्बोधित कर रहे थे। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रो. एचबी बोहिदर मुख्यवक्ता रहें। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अनिल कुमार पंडीर भी उपस्थित रहें। कार्यक्रम की अध्यक्षता डीन ऑफ फिजिकल साईंसिज प्रो. देवेन्द्र मोहन ने की।

प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि बाल्मीकि द्वारा लिखी रामायण में भगवान श्री राम के जन्म तथा उनसे सम्बन्धित अन्य घटनाओं की खगोलीय स्थिति की जानकारी है। उनके आधार पर पता चला है कि भगवान श्री राम का जन्म 10 जनवरी, 5114 ई. पूर्व हुआ था। उन्होंने बताया कि भारत और लंका को जोड़ने वाला रामसेतु भी राम द्वारा ही निर्मित है, यह भी वैज्ञानिक तथ्यों से सिद्ध हो गया है। हमारी इन रचनाओं से तथा आज से 5000-6000 वर्ष पूर्व के खगोलीय ज्ञान से यह भी सिद्ध होता है कि भारत का खगोलीय ज्ञान अत्यन्त उच्चकोटी का था। विदेशों ने हमें नहीं बल्कि हमने दुनिया को खगोलीय ज्ञान दिया है। उन्होंने कहा कि भारत की प्राचीन विज्ञान एवं शिक्षा अत्यन्त उच्च कोटि की थी। हमें फिर से उसी शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक रूप से स्थापित करना होगा। मुख्य वक्ता प्रो. एचबी बोहिदर ने पिछले 600 वर्षों की वैज्ञानिक प्रगति के बारे में बताया तथा डॉ. सीवी रमन के विज्ञान के क्षेत्र में योगदान की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि डॉ. सीवी रमन के वैज्ञानिक सिद्धान्त दुनिया की वैज्ञानिक खोजों के लिए अतुलनीय है। उन्होंने शोधार्थियों से आह्वान किया कि वे ज्यादा बड़े प्रयोगों व उपकरणों के बारे में ना सोचें। लगातार छोटे-छोटे प्रयास करते रहे तथा प्रकृति के बारे में सोचते रहे। सफलता अवश्य मिलेगी। उन्होंने बताया कि डॉ. रमन भी कहा करते थे कि प्रकृति अद्भुत अध्यापक है। प्रकृति के पास हर समस्या का समाधान है। प्रो. देवेन्द्र मोहन ने स्वागत सम्बोधन देते हुए दो दिवसीय कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि शोध के लिए बेहतर बुनियादी ढांचे और संसाधनों की आवश्यकता होती है जो शोधार्थियों को विश्वविद्यालय उपलब्ध करवा रहा है। उन्होंने बताया कि विश्व विज्ञान दिवस के अवसर पर डीन ऑफ फिजिकल साईंसिज कार्यालय द्वारा प्रश्नोत्तरी, पोस्टर मेकिंग व निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भौतिकी विभाग की प्रो. सुनीता श्रीवास्तव, प्रो. सुजाता सांघी, प्रो. दीपक केडिया, प्रो. कुलदीप बंसल, प्रो. जे.बी. दहिया, प्रो. अशोक चौधरी, प्रो. मुकेश शर्मा, डॉ. विकास कुमार, डॉ. कुलदीप कलकल व डॉ. कश्मीरी लाल सहित अन्य शिक्षक, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित रहें।

बदलती तकनीक के साथ हमें खुद को ढालना होगा: प्रो. टंकेश्वर

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के तकनीकी शिक्षा गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम-3 (टीईक्यूआईपी-3) के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर साईंस एंड इंजीनियरिंग तथा प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी विभागों के सौजन्य से 'रिसेंट ट्रेंडस इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला मंगलवार को शुरू हुई। राष्ट्रीय कार्यशाला के पहले तकनीकी सत्र का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अनिल कुमार पुंडीर भी उपस्थित रहे। सत्र की अध्यक्षता टीईक्यूआईपी-3 के समन्वयक प्रो. धमेन्द्र कुमार ने की। भारतीय शिक्षा पीठ इंस्टीट्यूट ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन एंड मैनेजमैंट के निदेशक प्रो. एमएन होडा बतौर मुख्यवक्ता उपस्थित थे। प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि युवाओं को नई तकनीकों से अवगत करवाने में तकनीकी शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि तकनीक में तेजी से बदलाव हो रहे हैं। तकनीकी प्रयोग व समाज व राष्ट्र की समस्याओं के समाधान के लिए होने चाहिए। बदलती तकनीक के साथ हमें खुद को ढालना होगा। अब हम उस तकनीक का उपयोग नहीं कर रहे हैं जो कुछ साल बाद एक उछाल लाती थी। वैज्ञानिक विकास के लिए युवा पीढ़ी के बीच सिखने के मूल्य को बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से अपील करते हुए कहा कि उन्हें नई तकनीकों से अवगत रहना चाहिए और समाज में आने वाली समस्या को हल करने के लिए अपने विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना चाहिए। मुख्य वक्ता प्रो. एमएन होडा ने कहा कि स्नातकों के बीच सिखने की रूचि पैदा करने के लिए शिक्षण एवं सिखने के तरीके प्रभावी होने चाहिए। टीईक्यूआईपी-3 के समन्वयक प्रो. धमेन्द्र कुमार ने अपने स्वागत सम्बोधन में कार्यशाला के विषय के साथ टीईक्यूआईपी की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक दुनिया में तेजी से हो रहे बदलावों तथा उद्योगिक चुनौतियों से निपटने के लिए शैक्षणिक संस्थानों द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना होगा। उन्होंने बताया कि कार्यशाला के दौरान पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, प्रभारी, अधिकारी, शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें।

> गुजवि में 'रिसेंट ट्रेंडस इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ

आज समाज - 28-2-2017